राष्ट्र निर्माण में युवाशक्ति का योगदान

डॉ. अनिल शर्मा
रूड़की

युवाशक्ति किसी भी देश की वह ताकत है जो उसके भविष्य को बदल सकती है। युवाओं में भी अधिकतर संख्या छात्र–छात्राओं की है जो इस अवस्था में अपने भावी जीवन के लिए विद्या रूपी शक्ति का अर्जन कर रहे होते हैं। अत्यंत खेद का विषय है कि आज युवा वर्ग दिग्भ्रमित है, उसे अपना भविष्य असुरक्षित दिखाई दे रहा है और यही कारण है कि वह अनुशासन भंग करने पर भी आमादा दिखाई पड़ता है।

युवक परिवार, समाज अथवा देश की रीढ़ होते हैं, युवावस्था मधु ऋतु के समान है, यही साधना की सच्ची अवस्था है। इसी अवस्था में युवा वर्ग शक्ति का संचय करता है। युवकों के पास चुनौतियों से जूझने का असीम बल होता है। इनकी संवेदनशीलता निश्छल, निर्मल होती है, जो स्वार्थों के ऊपर उठी होती है और मानव कल्याण को समर्पित होती है, इनमें पवित्र भावनाएं भरी होती हैं। युवक प्रगति, परिवर्तन एवं क्रांति के दूत होते हैं।

छात्र किशोरावस्था से युवावस्था की ओर बढ़ने वाले शक्ति–स्रोत होते हैं, इनके मन में उत्साह, साहस, प्रफुल्लता–काल्पनिकता और आदर्शवादिता का डेरा होता है, वे बहुत कुछ कर गुजरना चाहते हैं। यदि उनकी शक्ति को उचित दिशा निर्देश मिल गया तो वे समाज को नई शक्ति देने की क्षमता रखते हैं, देश को आकाश की ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं और संपूर्ण विश्व को आदर्श रूप दे सकते हैं। यदि इनकी शक्ति को विपरीत दिशा मिली तो ये विध्वंसक बन बैठते हैं और अराजकता एवं अनुशासनहीनता का साम्राज्य फैला सकते हैं। इस स्थिति में युवा शक्ति निर्माण के बजाय विनाश का कारण बन जाती है।

इतिहास साक्षी है कि युवकों ने कई बार गुरूत्तर भार सम्हाले हैं और समाज को नई गति दी है। कंस के अत्याचारों से जब मथुरा एवं आस–पास का भू–भाग दुःखी था, तब एक युवा कृष्ण ने ही जनता के कष्टों के निवारण के लिए अत्याचारी कंस का वध किया था, युवा कृष्ण ने ही इन्द्रकोप से मथुरावासियों को बचाने के लिए गोवर्द्धन पर्वत को उठाया। कृष्ण के पूर्व भी त्रेता युग में युवक राम ने राक्षसों के अत्याचारों से त्रस्त आर्यों की रक्षा की तथा दुराचारी रावण का वध किया। राजसी ऐश्वर्य का परित्याग कर भारत एवं विश्व को निर्वाण का संदेश देने वाले बुद्ध युवा ही थे। ऐसे ही महावीर, ध्रुव, प्रह्लाद, लव, कुश, भगत सिंह, खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खां आदि भी युवा ही थे। इन युवा क्रांतिकारियों ने ओछी राजनीति का पाठ नहीं पढ़ा था, समाज और देश इनके लिए सर्वोपरि थे। स्वामी विवेकानंद ने युवावस्था में ही आध्यात्मिक जगत में भारत का मस्तक ऊंचा किया था। भारत का उत्थान उनके जीवन का लक्ष्य था।

विश्व का इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि युवाओं की प्रतिभा अतुलनीय रही है, उनके कार्यों ने समृद्धि के नए द्वार खोले हैं और उनके मस्तिष्कों ने संभावनाओं के नए आयामों की रचना की है। फ्रांस के लुइस ब्रेल ने 15 वर्ष की आयु में ही अंधों के लिए ब्रेल–लिपि की खोज कर ली थी। आइन्सटीन ने 16 वर्ष की आयु में सापेक्षता के सिद्धांत को ढूंढा था। न्यूटन ने अपने जीवन के 23वें वर्ष में ही गुरूत्वाकर्षण के सिद्धांत को खोजा था। उपन्यासकार जॉन आस्टिन 19 वर्ष की आयु में ही चर्चित हो गई थी और पिकविक पेपर्स के लेखक चार्ल्स डिकेन्स 25 वर्ष की आयु में ही प्रसिद्धि पा चुके थे और मार्टिन लूथर 21 वर्ष की आयु में ही धर्म–प्रचारक बन गए थे।

युवाओं की उम्र की सीमा रेखाएं निर्धारित नहीं की जा सकती। उनका रूप एवं आकार भी नहीं दर्शाया जा सकता है। युवा की परिभाषा भी सरल सुगम नहीं। युवा में असीम साहस होता है, उफनता जोश होता है, उसकी आंखों में आत्मविश्वास झलकता है, उसकी हंसी बादलों की गर्जना को मात देती है। उसका लक्ष्य अचूक होता है। स्थितियों को वह अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता रखता है। किसी कवि ने कहा भी है –

चलो तो प्रलय मचा दो तुम, भूधर को भी सरका दो तुम।
इंगित पर वसुधा नाच उठे, पानी में आग लगा दो तुम।।

युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए उत्तम शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। यह कर्त्तव्य सरकार का है कि वह ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करे जिससे युवाओं को उनकी योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप उन्नति का अवसर प्राप्त हो सके। युवा देश के भावी निर्माता एवं भाग्य विधाता हैं। इन्हें विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में उच्चकोटि की शिक्षा की आवश्यकता है, जहां वे उत्कृष्ट सैद्धान्तिक विश्लेषण कर सकें, चिंतन–मनन और विचार–मंथन में अपने को लीन कर सकें और बदलती स्थितियों के अनुरूप जीवन–मूल्यों का सृजन कर सकें।

स्वामी विवेकानंद और वीर शिवाजी के देश का युवा आज निराश है। पत्थर में ठोकर मारकर जल निकालने की क्षमता रखने वाली युवा शक्ति आज पराजित मनोवृत्ति लिए हुए है। वह दिशाहीन है, टूट रही है, बिखर रही है, राजनीतिज्ञों की गिद्ध दृष्टि इस शक्ति को तोड़ने में लगी है। विद्यालयों में हिंसा का ताण्डव हो रहा है, वहां खिड़कियां, दरवाजे, मेजें, कुर्सियां तोड़ना सामान्य घटना बन चुकी है। स्थानीय गुण्डे इन भोले–भाले छात्र–छात्राओं को गुमराह कर रहे हैं। देश के वर्तमान माहौल को ठीक करने के लिए हिंसक और नासमझ युवकों की कतई आवश्यकता नहीं है, अपितु अहिंसक, विवेकशील एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित युवा शक्ति के बल पर ही विषम परिस्थितयों से पार पाया जा सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में युवा शक्ति की गिरती स्थिति के अनेक प्रमुख कारण हैं –

1. शिक्षा का व्यवसायीकरण।
2. सिफारिश एवं राजनैतिक हस्तक्षेप।
3. राष्ट्रीय चरित्र में गिरावट।
4. शिक्षा का जीवन की समस्याओं से अलग होना।
5. रोजगारपरक शिक्षा का अभाव।
6. आरक्षण की व्यवस्था के कारण योग्य युवाओं में निराशा।
7. नैतिक शिक्षा का अभाव।
8. विकास के कार्यों में युवाओं की भागीदारी नगण्य।
9. गुरू–शिष्य परम्परा के गिरते मूल्य।
10. अभिभावकों के पास अपने बच्चों के लिए समय न होना।
11. सस्ते मनोरंजन के साधनों में वृद्धि।

आज आवश्यकता है युवा शक्ति को दिग्भ्रमित होने से बचाने की। आज आवश्यकता है तिलक, राजा राममोहन राय, गांधी, नेहरू, शास्त्री, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद सरीखे प्रेरणा स्रोतों की जो युवा शक्ति की क्षमताओं को उचित प्रवाह दे सकें और उनका रचनात्मक उपयोग देश के निर्माण में कर सकें। आज आवश्यकता है नैतिक शिक्षा की जिसका बीजारोपण प्राथमिक शिक्षा के समय से ही किया जाए। आज आवश्यकता है युवाओं को अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों को पहचानने की और तदनुरूप कार्य करने की। आज आवश्यकता है शिक्षण संस्थाओं को राजनीति से दूर रखने की और आवश्यकता है हड़तालें, घेराव एवं हिंसा समाप्त करने की।

छात्र असंतोष को दूर करने के लिए तथा दिग्भ्रमित युवाओं को सही दिशा में लगाने के लिए हमें शिक्षा व्यवस्था में अपेक्षित सुधार करने होंगे। शिक्षा ऐसी हो जो उनमें नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का संचार कर सके और उन्हें जीवन के लक्ष्य का बोध कराए। शिक्षा रोजगारपरक हो ताकि शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी युवाओं में भविष्य को लेकर असुरक्षा की भावना न हो। युवा छात्रों को आज की गंदी राजनीति से दूर रखना भी आवश्यक है। इस राजनीति के संपर्क में आने से वे अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं। उनमें विकृत महत्वाकांक्षाएं जन्म ले लेती हैं, जिनकी पूर्ति हेतु वे अनैतिक कार्यों में संलग्न हो जाते हैं। उनमें आक्रोश एवं विद्रोह को पनपने देने वाले कारणों पर प्रभावी अंकुश लगाकर ही हम छात्र असंतोष का निदान कर सकते हैं। वर्तमान पीढ़ी के छात्रों को रचनात्मक क्रिया–कलापों में संलग्न करके तथा समाज–सेवा की प्रेरणा देकर दिग्भ्रमित होने से बचाया जा सकता है।

युवाओं को अपना व्यक्तित्व प्रभावशाली बनाने के लिए अनुशासित रहना भी आवश्यक है। युवा शक्ति दिन–प्रतिदिन जिन मोर्चों पर जूझते हैं, उन पर विजय हासिल करने की प्रेरणा है–अनुशासन। आज अनुशासन को जीवन के सिद्धांत की तरह पालन करना चाहिए। यदि हम अनुशासन को अपने जीवन में एक आवश्यकता के रूप में स्वीकार नहीं करते तो निश्चित मानिए हम सफलता के लिए जरूरी सबसे बड़े मंत्र को नजर अंदाज कर रहे हैं। अनुशासनहीन व्यक्ति अव्यवस्थित, पिछलग्गू और निम्न श्रेणी के ही साबित होते हैं। अनुशासन के लिए जरूरी है स्वयं को अच्छे से जानना और उन तरीकों के प्रति जागरूक होना जिनकी बदौलत कठिनाइयों, चिंताओं, कुंठा, निराशा और चुनौतियों से पार पाया जा सकता है। अनुशासन व्यक्ति को लक्ष्य पर निगाह टिकाए रखते हुए उसे हासिल करने के क्रम में आवश्यक सबक सीखने और फिर उसमें दक्षता प्राप्त करने में भी मदद करता है। आमतौर पर जो लोग आत्म–केन्द्रित और उद्देश्य पर निगाह रखते हुए अपनी प्राथमिकताओं पर टिके रहते हैं, वही सामान्यतः सफलता प्राप्त करते हैं। अतः युवाओं को यह सूत्र वाक्य समझना ही होगा कि वे जितना अधिक अनुशासित रहेंगे, उतनी ही जल्दी वे अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे तथा उनका जीवन आसान होता जाएगा।

युवाओं के मनोविज्ञान को समझकर तदनुरूप शिक्षा की व्यवस्था की जाए तथा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की जाए तो युवा शक्ति को गति मिल सकती है और वह सर्जनात्मक कार्यों में लगाई जा सकती है। युवा शक्ति का उपयोग राष्ट्र निर्माण में हो, इसके लिए देश के भाग्यविधाताओं से अपेक्षा है कि वे दूरदर्शिता से काम लेते हुए युवाओं के प्रति स्नेह, संयम, सहानुभूति तथा प्रोत्साहन दर्शाएं। स्वयं युवा भी इस बात का चिंतन करें कि उन्हें किसी के हाथ का खिलौना नहीं बनना है तथा अपने आपको प्रगति–पथ पर बढ़ाते हुए सदैव समाज एवं राष्ट्र का हित सर्वोपरि रखना है –

प्रबल झंझा के थपेड़ों से निरंतर तू लड़े जा।
यदि न देता साथ कोई, तू अकेला ही बढ़े जा।
आज अपने पथ का बस तू स्वयं निर्माण करना।
क्यों पतन की ओर जाता, सीख ले उत्थान करना।।

जय हिंद, जय युवा शक्ति।